

भगत सहि की जयंती

प्रलिम्स के लिये:

भगत सहि, हदुिस्तान रिपिब्लिकिन एसोसिएशन, नौजवान भारत सभा ।

मेन्स के लिये:

भारतीय राष्ट्रिय आंदोलन में स्वतंत्रता सेनानयिों का योगदान ।

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भगत सहि की 115वीं जयंती मनाई गई । इस अवसर पर श्रद्धांजलि देते हुए भारत के प्रधानमंत्री नेचंडीगढ़ हवाईअड्डे का नामकरण भगत सहि के नाम पर करने की घोषणा की ।



जीवन परिचय:

■ आरंभिक जीवन:

- भगत सहि का **जन्म 26 सतिंबर, 1907** में भागनवाला (Bhaganwala) के रूप में हुआ तथा इनका पालन-पोषण पंजाब के दोआब क्षेत्र में स्थिति जालंधर ज़िले के संधू जाट किसान परिवार में हुआ ।
 - वह एक ऐसी पीढ़ी से ताल्लुक रखते थे जो **भारतीय राष्ट्रिय आंदोलन के दो नरिणायक चरणों** में हस्तक्षेप करती थी- **पहला, लाल-बाल-पाल के 'चरमपंथ' का चरण** और दूसरा, **अहसिक सामूहिक कार्रवाई का गांधीवादी चरण** ।

■ स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका:

- वर्ष 1923 में भगत सहि ने **नेशनल कॉलेज, लाहौर** में प्रवेश लिया, जिसकी स्थापना **लाला लाजपत राय एवं भाई परमानंद** ने की थी तथा प्रबंधन भी इन्हीं के द्वारा किया जाता था ।
 - शक्तिषा के क्षेत्र में स्वदेशी का वचिार लाने के उद्देश्य से इस कॉलेज कोसरकार द्वारा चलाए जा रहे संस्थानों के वकिल्प के रूप में **स्थापति** किया गया था ।
- वर्ष 1924 में वह कानपुर में **सचदिरनाथ सान्याल** द्वारा एक साल पहले शुरू किये गए **हदुिस्तान रिपिब्लिकिन एसोसिएशन (HRA)** के सदस्य बने । एसोसिएशन के मुख्य आयोजक **चंद्रशेखर आजाद** थे और भगत सहि उनके बहुत करीबी बन गए थे ।

- **हदुस्तान रपिब्लिकिन एसोसिएशन के सदस्य के रूप में** भगत सहि ने 'फिलॉसफी ऑफ द बॉम्ब' (Philosophy of the Bomb) को गंभीरता से लेना शुरू किया।
 - **फिलॉसफी ऑफ द बॉम्ब** नामक प्रसिद्ध लेख **क्रांतिकारी भगवती चरण वोहरा** ने लिखा था। उन्होंने फिलॉसफी ऑफ द बॉम्ब सहित तीन महत्त्वपूर्ण राजनीतिक दस्तावेज़ लिखे; अन्य दो दस्तावेज़ **नौजवान सभा का घोषणापत्र** और **HSRA का घोषणापत्र** थे।
 - उन्होंने **सशस्त्र क्रांति** को ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ एकमात्र हथियार माना।
 - **वर्ष 1925 में भगत सहि लाहौर लौट आए** और अगले एक वर्ष के भीतर उन्होंने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर '**नौजवान भारत सभा**' नामक एक उग्रवादी युवा संगठन का गठन किया।
 - अप्रैल 1926 में भगत सहि ने **सोहन सहि जोश** के साथ संपर्क स्थापित किया तथा उनके साथ मिलकर '**श्रमिक और किसान पार्टी (Workers and Peasants Party)**' की स्थापना की, जिसने **पंजाबी में एक मासिक पत्रिका कीर्तिका** प्रकाशन किया।
 - साल भर तक भगत सहि ने सोहन सहि जोश के साथ मिलकर कार्य किया तथा कीर्तिका के संपादक मंडल में शामिल हो गए।
 - वर्ष 1927 में **काकोरी कांड (Kakori Case)** में संलग्न होने के आरोप में उन्हें **पहली बार गिरफ्तार** किया गया था तथा अपने छद्म नाम 'दिरोही' से लिखे गए लेख हेतु आरोपी माना गया।
 - वर्ष 1928 में भगत सहि ने **हदुस्तान रपिब्लिकिन एसोसिएशन का नाम बदलकर हदुस्तान सोशलसिट रपिब्लिक एसोसिएशन (HSRA)** कर दिया।
 - वर्ष 1930 में चंद्रशेखर आज़ाद की मृत्यु के साथ ही HSRA भी समाप्त हो गया।
 - **पंजाब में HSRA का स्थान नौजवान भारत सभा** ने ले लिया।
 - लाला लाजपत राय की मृत्यु का बदला लेने के लिये भगत सहि और उनके साथियों ने पुलिस अधीक्षक जेम्स ए स्कॉट की हत्या की साजिश रची। हालाँकि क्रांतिकारियों ने गलती से **जे.पी. सॉन्डर्स** को मार डाला। इस घटना को **लाहौर षड्यंत्र मामला (1929)** के नाम से जाना जाता है।
 - वर्ष 1928 में लाला लाजपत राय ने साइमन कमीशन के भारत आगमन के विरोध में निकाले गए एक जुलूस का नेतृत्व किया था। इस जुलूस में शामिल लोगों पर पुलिस ने बर्बरता से लाठीचार्ज किया, जिसमें **लाला लाजपत राय** गंभीर रूप से घायल हो गए और बाद में उनकी मृत्यु हो गई।
 - भगत सहि और बटुकेश्वर दत्त ने दो दमनकारी विधेयकों- **सार्वजनिक सुरक्षा विधेयक और व्यापार विवाद विधेयक** के पारित होने के विरोध में **8 अप्रैल, 1929 को केंद्रीय विधानसभा में बम फेंका**।
 - उनके पत्रकों में किये गए उल्लेख के अनुसार, उनके द्वारा बम फेंके जाने का उद्देश्य, कसिी को मारना नहीं था बल्कि बिधरि हो चुकी ब्रिटिश सरकार को उसके द्वारा नरिदयतापूर्वक किये जा रहे शोषण के बारे में सचेत करना था।
 - इस घटना के बाद भगत सहि और बटुकेश्वर दत्त दोनों ने आत्मसमर्पण कर दिया तथा मुकदमे का सामना किया ताकि अपने उद्देश्यों को जन-जन तक पहुँचा सकें। इस घटना के लिये उन्हें आजीवन कारावास की सज़ा सुनाई गई थी।
 - भगत सहि को लाहौर षड्यंत्र मामले में जे.पी. सॉन्डर्स की हत्या करने एवं बम नरिमाण का भी दोषी पाया गया तथा इस मामले में **23 मार्च, 1931** को सुखदेव एवं राजगुरु के साथ लाहौर में उन्हें फाँसी दे दी गई।
 - हर साल **23 मार्च** को स्वतंत्रता सेनानी भगत सहि, सुखदेव और राजगुरु को श्रद्धांजलि देने हेतु **शहीद दिवस** मनाया जाता है।
- **प्रकाशन:**
- मैं नास्तिक क्यों हूँ: एक आत्मकथात्मक प्रवचन (Why I Am an Atheist: An Autobiographical Discourse)
 - द जेल नोटबुक एंड अदर राइटिंग्स

स्रोत: हदुस्तान टाइम्स